UGC - CARE LISTED

ISSN: 0974 - 8946

अनुसन्धान-प्रकाशन-विभागीया त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

शोध-प्रभा

(A Refereed & Peer-Reviewed Quarterly Research Journal)

44 वर्षे तृतीयोऽङ्कः (जुलाईमासाङ्कः) 2019

प्रधानसम्पादकः
प्रो.रमेशकुमारपाण्डेयः
कुलपतिः

सम्पादकः
प्रो.शिवशङ्करमिश्रः
शोधविभागाध्यक्षः

सहसम्पादकः
डॉ.ज्ञानधरपाठकः
शोधसहायकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्
(राष्ट्रियमूल्याङ्कन-प्रत्यायनपरिषदा 'ए' श्रेण्या प्रत्यायितः, मानितविश्वविद्यालयः)
नवदेहली-16

हिन्दी विभाग

8. संस्कृत कविता का प्राचीन एवं नवीन परिदृश्य	**प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र**	62-77
9. भारतवर्ष में लेखनकला का उद्‌भव एवं विकास	**प्रो. शिवशङ्कर मिश्र**	78-85
10. मम्मटीय काव्यप्रयोजन : एक समीक्षा	**डॉ. मुकेश कुमार मिश्र**	86-101
11. वास्तु के वैदिक सिद्धान्त एवं वर्तमान में वास्तुकला की प्रासंगिकता	**डॉ. नीलम त्रिवेदी**	102-114
12. अनेकान्तवाद : एक सापेक्षात्मक व्यावहारिक दृष्टिकोण	**डॉ. अनुभा जैन**	115-123
13. आधुनिक संस्कृत कविताओं में स्त्री-जीवन	**डॉ. कमलेश रानी**	124-130
14. आधुनिक संस्कृत कविताओं में लोकजीवन	**डॉ. राजमङ्गल यादव**	131-138

English Section

15. Body is a Temple	**Dr. Sumitra Bhat & Smt. Uma K.N.**	139-144
16. Bankimchandra Chattopadhyay and the Concept of Dharma	**Sujay Mondal**	145-152

UGC - CARE Listed
जुलाई-सितम्बर, 2019

शोधप्रभा
वर्ष : 44, तृतीयोऽङ्कः

भारतवर्ष में लेखनकला का उद्भव एवं विकास

प्रो. शिवशङ्कर मिश्र*

सृष्टि की उत्पत्ति के बाद मनुष्यों की तर्कक्षमता जैसे-जैसे विकसित होती गयी अनेक प्रकार के प्रश्न उनके सामने आते गये। सृष्टि, जीव, जन्म, मृत्यु, मोक्ष, ईश्वरादि विषयक अनेक प्रकार की जिज्ञासायें उनके मन में उठीं तथा तद्विषयक अनेक खोज भी हुए। परिणामस्वरूप विविध ज्ञान उनकी बुद्धिगृह में संगृहीत होते गये। आचार्यों ने इस ज्ञानसम्पदा को आगे आने वाली पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए शिष्यों-प्रशिष्यों को दिया तत्पश्चात् उन्होंने भी आगे आने वाले शिष्यों में स्थानान्तरण कर दिया इसी प्रकार क्रमशः आगे भी, लेकिन एक समय ऐसा भी आया जब यह परम्परा सुदृढ़ नहीं रही और धीरे-धीरे ज्ञान का क्षय होने लगा तो आचार्यों ने जिस माध्यम से इस ज्ञानसम्पदा का संरक्षण किया वह माध्यम ग्रन्थ लेखन एवं ग्रन्थ सम्पादन के रूप में सुप्रसिद्ध हुआ विभिन्न वस्तुओं से लेखन सामग्रियों का निर्माण किया तथा अपने ज्ञान का संरक्षण किया। लेखन की उत्पत्ति कब हुई? यह प्रश्न प्रायः प्रत्येक विद्वान् के अन्तर्मन में चलता रहता है। भारत में लेखन का उद्भव, विकास तथा इतिहास क्या रहा है? एतद् विषयक अनेक प्रश्न उठते हैं जिनका समाधान प्रस्तुत लेख का प्रतिपाद्य है।

शिशु के हाथ में जब कलम या पेन्सिल पकड़ायी जाता है तो वह टेढ़ी-मेढ़ी रेखाएँ बनाता है जिसका कोई अर्थ नहीं, उसके हाथ रंग लग जाता है वह अनबुझ आकृतियाँ बनाता है, लेकिन जब उसका मस्तिष्क एवं शरीर की मांसपेशियाँ हृष्ट-पुष्ट हो जाती हैं तब वह समाज में व्यवहृत शब्दों की आकृति समझ पाता है एवं लिख भी लेता है। इससे ज्ञात होता है कि लेखन का विकास चित्रलिपि से ही हुआ है। अनेक गुफाओं में तत्कालीन विभिन्न संस्कृतियों के चित्र मिलते हैं जो अपनी भावनाओं को प्रदर्शित करने के एक अच्छे साधन थे। चित्रलिपि के बाद आरेखलिपि रही होगी जो कुछ रेखाओं से ही बन जाती थी ये भी चित्रलिपि की तरह विचार-भाव प्रदर्शन का एक साधन थी। वस्तुतः चित्रलिपि एवं आरेखलिपि एक ही हैं किन्तु विद्वद्गण अपनी इच्छानुसार इन्हें अलग-अलग भी मान लेते हैं। कालान्तर में आरेखलिपि ने ही शनैः-शनैः ब्राह्मीलिपि का रूप धारण कर लिया।

---

*शोधविभागाध्यक्ष,
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली

UGC - CARE LISTED

ISSN: 0974 - 8946

अनुसन्धान-प्रकाशन-विभागीया त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

शोध-प्रभा

(A Refereed & Peer-Reviewed Quarterly Research Journal)

44 वर्षे चतुर्थोऽङ्कः (अक्टूबरमासाङ्कः) 2019

प्रधानसम्पादकः
प्रो.रमेशकुमारपाण्डेयः
कुलपतिः

सम्पादकः
प्रो.शिवशङ्करमिश्रः

सहसम्पादकः
डॉ.ज्ञानधरपाठकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्
(राष्ट्रियमूल्याङ्कन-प्रत्यायनपरिषदा 'ए' श्रेण्या प्रत्यायितः, मानितविश्वविद्यालयः)
नवदेहली-16

हिन्दी विभाग

10. वैदिक एवं बौद्धकालीन स्त्रीशिक्षा की प्रासंगिकता	**प्रो. रमेश प्रसाद पाठक**	53-65
11. आख्यान : स्वरूप एवं महत्त्व	**प्रो. शिवशङ्कर मिश्र**	66-73
12. कैय्यट एवं प्रभाकर का भाषादर्शन को अवदान	**डॉ. ए. सुधा**	74-82
13. मृच्छकटिक में वर्णित समाज	**डॉ. मुकेश कुमार मिश्र**	83-105
14. रामायण में वर्णीत दैव-खण्डन एवं पुरुषार्थ	**डॉ. राजमंगल यादव**	106-112
15. प्रमाणों में अर्थापत्ति की अवधारणा	**डॉ. निशा रानी**	113-118
16. पातञ्जलयोगदर्शन में वर्णित योगाङ्गों में कार्यकारणभाव विमर्श	**श्री विजय गुप्ता**	119-125
17. कालिदास की कृतियों में जीवनकला	**डॉ. बी. जी. पटेल**	126-130

English Section

18. Methodology of textual Criticism of Sanskrit Manuscripts: A study	**Dr. Sachchidanand Snehi**	131-138
19. Aryabhata - Outlines of Life And Contributions	**Shri V. Ramesh Babu**	139-150

UGC - CARE Listed
अक्टूबर-दिसम्बर, 2019

शोधप्रभा
वर्ष : 44, चतुर्थोऽङ्कः

आख्यान : स्वरूप एवं महत्त्व

प्रो. शिवशङ्कर मिश्र *

संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषा है, इसका अत्यन्त विपुल वाङ्मय है। यह देवगिरा, देववाणी, सुरभारती, दैवीवाक् आदि संज्ञाओं से सम्बोधित की जाती है। इसके सुरभारती होने का अर्थ यह है कि यह सर्वथा दोषरहित सुसंस्कृत भाषा है, इसकी शुद्धता पवित्रता इस सीमा तक है कि देवता भी इसी भाषा में व्यवहार करते हैं। महाकवि दण्डी ने संस्कृत की महिमा का वर्णन इस प्रकार किया है-

संस्कृतं नाम दैवी वाक् अन्वाख्याता महर्षिभिः।[1]

What We Call Sanskrit is the divine language, as commented upon by the great sages.

संस्कृत सम्पूर्ण ज्ञान-विज्ञान की जननी है इसमें सबसे प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, रामायण, महाभारत, अष्टादश पुराण, उपपुराण, षड्दर्शन, वेदाङ्ग (शिक्षा, कल्प, निरुक्त, व्याकरण, छन्द, ज्योतिष) काव्य, नाटक, गद्य-पद्य, आख्यान, प्रहेलिका प्रभृति विद्याएँ सन्निहित हैं जो प्राचीनता के कलेवर में अत्यन्त आधुनातन एवं प्रासंगिक हैं।

हमारे ऋषियों एवं आचार्यों ने ज्ञान, विज्ञान, धर्म, अध्यात्म, संस्कृति, दर्शन एवं मानवीय मूल्यों की शिक्षा हेतु तथा ज्ञान की दृढ़ता हेतु विभिन्न शिक्षण पद्धतियों का आविष्कार किया था, जो जीवन के लिए अनिवार्य आचरणीय तत्त्व रहे हैं जिन्हे धर्म से जोड़कर जीवन के लिए अपरिहार्य तत्त्व के रूप में प्रतिष्ठित किया। इसी प्रकार किसी दुरूह विषय को सरलतम शब्दों में समझाने के लिए कहानी पद्धति (Story Mathod) का आविष्कार किया। यह कहानी पद्धति ही आख्यान, आख्यायिका, कथा आदि शब्दों से प्रतिपाद्य है। आख्यानों का उपदेश मानवजाति के समग्र कल्याण तथा विश्वमंगल की अभिवृद्धि के निमित्त है।

"आख्यान" शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख ऐतरेय ब्राह्मण में "शुनः शेप आख्यान" के प्रसंग में आता है। यहाँ प्रयुक्त "आख्यानविद्" शब्द आख्यान की सत्ता को प्रमाणित

---

*शोध विभागाध्यक्ष, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली-110016

1. काव्यादर्श 1/32

ISSN : 2455-717X

व्युत्पत्ति
VYUTPATTI

(A peer reviewed Half yearly Research Journal of Humanities & Social Science)

सम्पादक
प्रो. शिवशङ्कर मिश्र

सह सम्पादक
डॉ. रामनारायण द्विवेदी

Year : 2019 Month : Dec. Vol. 02

Published by : **Matrisadanam**, M.I.G - 2, A.D.A Colony, Nani, Prayagraj (U.P.)

ISSN : 2455-717X

व्युत्पत्ति

व्युत्पत्ति
VYUTPATTI

(A peer reviewed Half yearly Research Journal of Humanities & Social Sciences)

सम्पादक
प्रो. शिवशङ्कर मिश्र

सह–सम्पादक
डॉ. रामनारायण द्विवेदी

प्रबन्ध–सम्पादक
विजय गुप्ता

अतिथि सम्पादक
डॉ. राजन कुमार गुप्ता

अतिथि सह–सम्पादक
डॉ. कृपाशंकर मिश्र

Year : 2019 Month : Dec. Vol. 02

Published by : **Matrisadanam**, M.I.G - 2, A.D.A Colony, Nani, Prayagraj (U.P.)

अनुक्रम.....

क्र. सं. विषय	लेखक	पृष्ठ संख्या
1. आख्यानेषु पर्यावरणचिन्तनम्	प्रो. शिवशङ्करमिश्र:	01
2. प्राकृतवाङ्मये आकाशद्रव्यस्य अवधारणा	डॉ० आनंद-कुमार-जैन:	05
3. संस्कृतवाङ्मये वर्णितस्यायुर्वेदशास्त्रस्योपयोगिता	विजय गुप्ता	11
4. संस्कृतसाहित्ये शैक्षिकतत्त्वचिन्तनम्	डॉ. जीवनकुमारभट्टराई	18
5. पाणिनिव्याकरणे प्रक्रियामूलकश्चमत्कार:	राजू शर्मा	25
6. शब्दतत्त्वनिर्वचनम्	जगत् ज्योति पात्र:	29
7. विशिष्टाद्वैतप्रवर्तक: रामानुजाचार्य:	परमिन्दर कौर	37
8. चार्वाक दर्शन में स्वीकृत मतों का....	कुमार त्रिवेदी	41
9. भारतीय दर्शन में अन्त:करण विमर्श	निराली	50
10. यजुर्वेद में योग का स्वरूप	बलराम आर्य	56
11. अथर्ववेद एवं आयुर्वेद सम्मत सर्पविष.....	खुशबू कुमारी	67
12. श्रीमद्भगवद्गीता का सन्देश : निष्काम कर्मयोग	योगेश कुमार मिश्र	76
13. आयुर्वेद की आचार्य परम्परा......	सतीश कुमार	83

ISSN : 2455-717X

व्युत्पत्ति

वर्ष : ४, अंक : दिसम्बर २०१९, Vol. 02

आख्यानेषु पर्यावरणीयचिन्तनम्

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः*

संस्कृतवाङ्मये आख्यानं विशिष्टं स्थानं बिभर्ति। एतेषां विद्यतेऽत्यन्तं माहात्म्यम्। जीवनस्य समस्तेषु पक्षेषु साक्षात् परम्परया वा आख्यानानां प्रभावो निरन्तरमनुभूयतेऽस्माभिः। मानवेषु मूल्यसंस्थापनाय, तेषु मिथः प्रीतिसौख्यसंरक्षणाय तेषां जीवने धार्मिक-सामाजिक-सांस्कृतिक-आध्यात्मिकसंस्काराणामुद्भावनाय किमधिकं "रामादिवत् प्रवर्तितव्यं न तु रावणादिवत्" इत्यादिवचनैः प्रतिपदं सद्व्यवहारशिक्षणाय आविष्कृतमाख्यानतत्त्वमस्माकं तत्त्वविद्भिरवगीतैराचार्यैः। एतामाख्यानपद्धतिमेवाश्रित्य विष्णुशर्मणा नारायणपण्डितेन च लोकमंगलाय बालानां सुखबोधाय च सिंह-श्रृगालादीनां वृक्षसरोवरनदीविहंगानाञ्च मानवीयकरणं विधाय विश्वप्रसिद्धं हितोपदेशः पञ्चतन्त्रमिति रचनाद्वयं विरचितम्।

आख्यायते इत्याख्यानम्, आख्यायते अनेन इत्याख्यानम् इति द्विधा व्युत्पत्या आङ् उपसर्गपूर्वकं ख्याप्रकथने चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि इति धातुना च आख्यानशब्दस्य सिद्धिः। आख्यानं नाम पूर्ववृत्तोक्तिः। आख्यानमेव आख्यायिका। आख्यानम्, आख्यायिका, उपाख्यानं, कथा, संवादः सर्वे सामान्यतः पर्यायभूताः। यद्यपि सर्वेषु शब्देषु स्वकीयं किमप्यपूर्वं वैशिष्ट्यं भवति तथापि सामान्यतः समानत्वं सर्वेषु।

आख्यानेषु अनेके विषयाः वर्ण्यन्ते। वैदिकाख्यानेषु पौराणिकाख्यानेषु च नदीसरोवरतडागादीनां वृक्ष-तरु-गुल्म-लताप्रभृतिवनस्पतीनां निरूपणेन पर्यावरणमपि अत्यन्तं चारूतया चर्चितम्। अत्र प्रकृतेऽस्मिन् शोधपत्रे शाकुन्तलोपाख्यानम् गजेन्द्रमोक्षोपाख्यानञ्चाधिकृत्य प्रकृतेः पर्यावरणस्य च सौन्दर्यमुपस्थाप्यते।

गजेन्द्रमोक्षाख्यानप्रसङ्गे पर्वतस्य हरीतिनां वर्णयन् भगवान् वेदव्यासो भागवते एवं जगाद-

नानारण्यपशुव्रातसङ्कुलद्रोण्यलङ्कृतः।
चित्रद्रुमसुरोद्यानकलकण्ठविहंगमः॥
सरित्सरोभिरच्छोदैः पुलिनैर्मणिवालुकैः।
देवस्त्रीमज्जनामोद सौरभाम्ब्वनिलैर्युतः॥[१]

---

* **शोधविभागाध्यक्षः, श्री ला.ब.शा.रा.सं.विद्यापीठम्, नवदेहली-१६**

१. श्रीमद्भागवतम्, अष्टमस्कन्धः द्वितीयोऽध्यायः।

संस्कृत-विमर्शः

(An International Refereed & Peer-Reviewed Research Journal, UGC-CARE Listed)

नवशृङ्खला

संयुक्ताङ्कः 13-14 — वर्षम् 2019

ISSN : 0975-1769

(जुलाई 2017 - जून 2018)

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

(भारतशासन-मानवसंसाधनविकासमन्त्रालयाधीनः,
राष्ट्रियमूल्याङ्कन-प्रत्यायनपरिषदा 'ए'-श्रेण्या प्रत्यायितः समविश्वविद्यालयः)
नवदेहली

प्रकाशकः
कुलसचिवः
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
(मानितविश्वविद्यालयः)
56-57, इन्स्टीट्यूशनल एरिया
जनकपुरी, नवदेहली-110056

e-mail : rsksrp@yahoo.com
website : www.sanskrit.nic.in

© राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

ISSN : 0975-1769

संस्करणम् : 2019

प्रत्यङ्कम् - 50.00

मुद्रकः
डी.वी. प्रिंटर्स
97-यू.बी., जवाहर नगर, दिल्ली-110007
मो.: 9818279798, 9990279798

विषयानुक्रमणिका

परामर्शदातृ-समितिः — *v*

Advisory Board — *vi*

समीक्षा-समितिः/सम्पादक-मण्डलम् — *vii*

Review Committee/Editorial Board — *viii*

1. लक्षणा —प्रो. कृष्णचन्द्रचतुर्वेदः 1
2. पाणिनीये कर्मसञ्ज्ञाविमर्शः —डॉ. जगदीश भट्टः 9
3. भारतीयदर्शनेषु मनोनुशीलनम् —डॉ. शिवशंकर मिश्रः 18
4. स्फोटतत्त्वविमर्शे चितेः स्वरूपम् —डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी 25
5. व्याकरणादिशास्त्रसम्मतं नित्याऽनित्यविवेचनम् 30
   —श्री शेषमणि शुक्लः
6. शान्तिमन्त्र के क्रियान्वयन से प्रकृति में सन्तुलन 37
   —डॉ. रानी दाधीच
7. छात्रमूल्याङ्कनप्रक्रियायां विद्यालयीयपरिवेशस्य प्रभावः 49
   –हरिप्रसाद मीणा
8. काव्य का समसामयिक शास्त्र अभिनवकाव्यालङ्कारसूत्रम् 55
   —अजय कुमार मिश्रा
9. विशिष्टाद्वैतवेदान्तदर्शने अन्तःकरणस्य भूमिका 71
   —मोनू देवी
10. वैयारकणभूषणसारदिशा द्वितीयार्थनिरूपणम् 77
    —डॉ. अशोक कुमार मिश्रः
11. संस्कृतप्राकृतव्याकरणयोः अन्तस्सम्बन्धः 82
    —डॉ. गजाननधरेन्द्रः

संस्कृत-विमर्शः 2019 (अङ्कः 13-14) ISSN : 0975-1769

भारतीयदर्शनेषु मनोऽनुशीलनम्

-डॉ. शिवशंकरमिश्रः
श्री ला.ब.शा.रा.सं. विद्यापीठम्, नवदेहली

[भारतीयदर्शनेषु मनसः कीदृशी अवधारणा इति उल्लिखिता वर्तते तस्या एव सम्यक् निदर्शनमत्र अनुसन्धात्रा निबद्धम्। -सं०]

येन जगति निखिलाः व्यवहाराः प्रवर्तन्ते येन च ज्ञानेच्छासुखादयः सम्पाद्यन्ते यत्र चागते सति दोषे विक्षिप्तोन्मत्तप्रमत्ताः निर्दोषे च सद्विचारज्ञानशीलसम्पन्नाः भवन्ति तस्यैव नाम मनः इति।

श्रुतिस्मृतिपुराणदर्शनकाव्यनाट्यसाहित्यकलापेषु अहरहरनुष्ठीयमानव्यवहारेषु च उद्देश्यत्वेन मनसो नैकशः उल्लेखः विद्यते, प्रायशः सर्वैरपि दार्शनिकैः तत्त्वविद्भिश्चायं पदार्थः उद्देशलक्षण-परीक्षामाध्यमेन वाग्व्यवहार-विषयीकृतः। विशेषतः उपनिषत्साहित्ये मनविषयिणी भूयसी चर्चा सम्प्राप्यते-

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्...।[1] तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।[2] चन्द्रमा मनसो जातः...।[3] मननसाधनमन्तःकरणम्...।[4] चञ्चलं हि मनः कृष्ण...।[5] मनो दुर्निग्रहं चलम्...।[6] मनसः काममाकूतिं वाचः...।[7] मन एव मनुष्याणां कारणं. ..।[8] मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै...।[9] मनसस्तु परा बुद्धिर्बुद्धेरात्मामहान्परः।[10]

1. ऋग्वेदः
2. शु.य.संहिता 34/1
3. शु.य.संहिता 31/8
4. ऋग्वेदः 10/191/13, सायणभाष्ये
5. श्रीमद्भगवद्गीता 6/34
6. श्रीमद्भगवद्गीता 6/35
7. श्रीसूक्तम् 5
8. ब्रह्मबिन्दूपनिषद् 2
9. सूरदास पदावली/ सूरसारावली
10. श्रीमद्भगवद्गीता 3/42

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

ISSN 2395-3055

अगस्त 2020 ₹ 25

संस्कृत की एक श्रेष्ठ पत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन 'रजि0' की मासिक पत्रिका

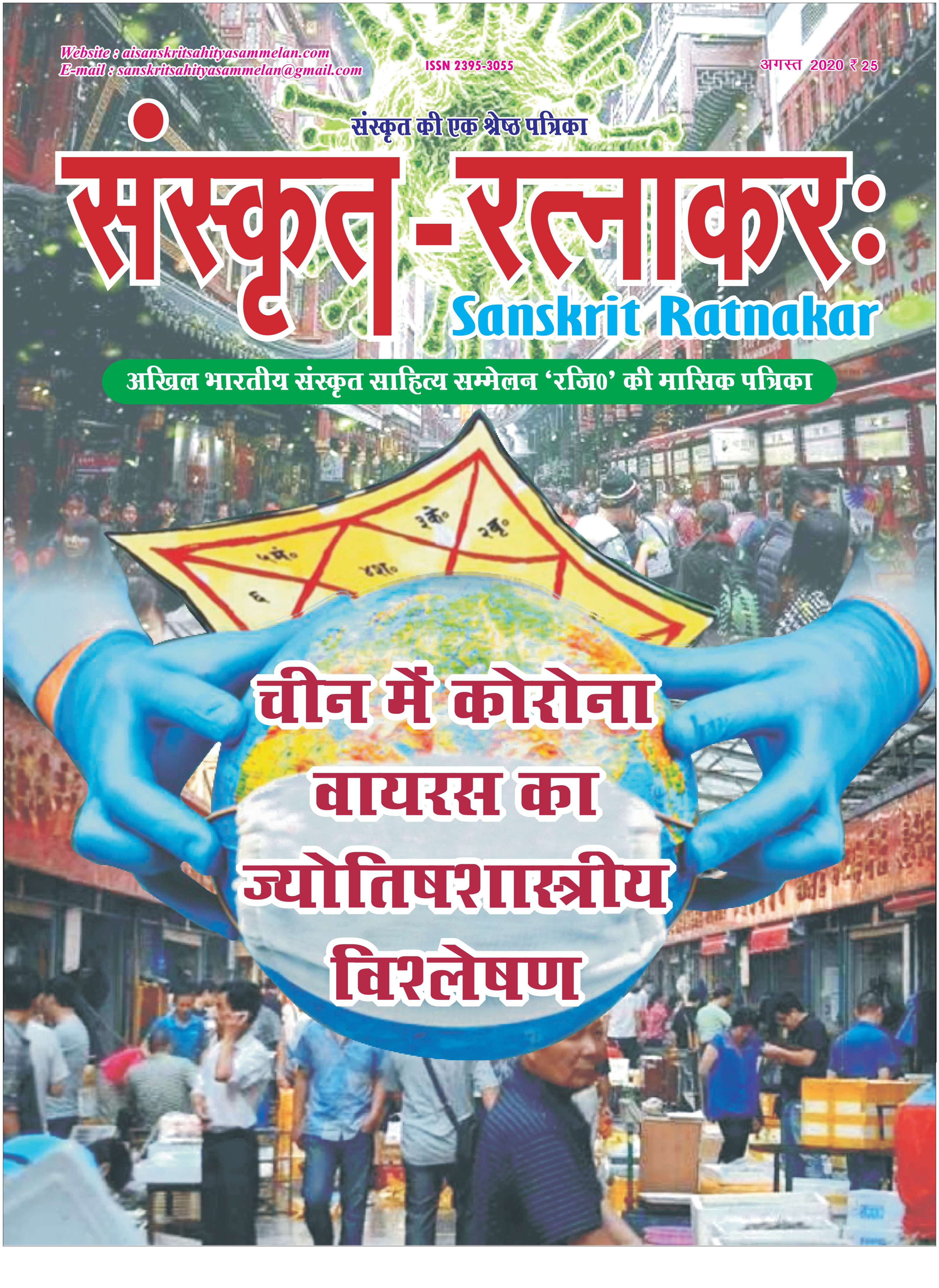

चीन में कोरोना वायरस का ज्योतिषशास्त्रीय विश्लेषण

वर्ष : 7 अंक : 03 (75)

संस्कृत की एक श्रेष्ठ पत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन 'रजि०' की मासिक पत्रिका

स्वामित्व : अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)

अध्यक्ष : प्रो० रमेश कुमार पाण्डेय
अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन

प्रधान संपादक (पदेन) : रमाकान्त गोस्वामी

संपादक : प्रो० शिवशंकर मिश्र

व्यवस्थापक मण्डल : ओ.पी. सर्राफ, आर.एन. वत्स 'एडवोकेट'
ओ.पी. जिन्दल, एन.के. गोयल

ग्राफ़िक्स डिजाइनर : मनोज कुमार

संपादकीय कार्यालय : संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसिफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67

संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक : रमाकान्त गोस्वामी

दूरभाष : 011-41552221 मो.-9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए संस्कृत-रत्नाकरः जिम्मेदार नहीं है।

सम्पादकीयम्

सम्प्रति सकलं विश्वं कोरोनाव्याधिना समाकुलितं विद्यते, सर्वं कार्यमवरुद्धमिदानीम्। असंख्यजनाः वृत्तिविहीना जाताः, लक्षशोऽप्यधिकाः मानवाः अकालकालकवलिताः, व्यवसायाः विनष्टाः, जीवनयापनाय दैनिकवृत्तौ संलग्नाः श्रमिकाः सर्वथा वृत्तिशून्याः अभूवन्। विश्रान्तिनिलयानि अतिथिगृहाणि, (होटल) आहार-प्रदातृकेन्द्राणि, (रेस्टोरेंट) प्रायशः पिहितानि सन्ति। किमधिकं चिकित्सालयेषु, उद्योगालयेषु, शिक्षणसंस्थानेषु, कार्यालयेषु, पुस्तकालयेषु, धर्मशालासु, मन्दिरेषु, आपणेषु, गृहनिर्माणादिकार्येषु च सर्वत्र व्यवधानं दरीदृश्यते। देशात् देशान्तरगमनार्थं वायुयानं, रेलयानं वसयानमपि सारल्येन नास्ति सुलभम्। संक्षेपेण जीवनोपयोगि अपरिहार्यमपि साधनं ऋजुरीत्या नोपलभ्यते।

अस्यां विपरीतपरिस्थितावपि यथा चिकित्सकैः, आरक्षिजनैः, पत्रकारैश्च स्वकीयं दायित्वं उत्साहेन सम्पादितं तथैव ज्ञानप्रदातृभिः गुरुभिः (शिक्षकैः) सततं अध्यापनकार्यं समाचरितम्। **"स्वाध्यायान्मा प्रमदः"** इति श्रुतिवचनमनुपालयन्तः शिक्षकाः दिवानिशं गृहादेव आनलाईनमाध्यमेन अत्यन्तं निष्ठया करुणया च छात्रान् अध्यापितवन्तः, परीक्षादिकार्यमपि सम्पादितवन्तः। आचार्याणामेतत् कार्यकौशलं समर्पणञ्च अन्यानपि जनान् प्रेरणायै प्रकल्प्यते।

समाजे शिक्षा-संस्कार-संस्कृतिसंस्थापने शिक्षकाणां महती भूमिका भूयते। स्वाचरणेन, स्वव्यवहारेण, स्वकार्येण, स्वविचारेण, स्वचिन्तनेन, स्वनिर्देशनेन च शिक्षकाः छात्रेषु विशिष्टगुणवैभवं जनयन्ति। अतएव शिक्षकः नास्ति साधारणोऽपितु असाधारणः यथोक्तं महर्षिणा चाणक्येन- **"शिक्षक कभी साधारण नहीं होता प्रलय और निर्माण उसकी गोद में पलते हैं।"**

अस्माकं जवीने अस्मान् यः प्रेरयति, यः सूचयति, यः दर्शयति, यः शिक्षयति यश्च बोधयति ते सर्वे गुरुपदवाच्याः भवन्ति-

प्रेरकः सूचकश्चैव वाचको दर्शकस्तथा।
शिक्षको बोधकश्चैव षडेते गुरवः स्मृताः॥

प्रो० शिवशंकरमिश्रः

विषय सूची

03 चीन में करोना वायरस का ज्योतिषशास्त्रीय विश्लेषण — मनमोहन शर्मा

भारते भारती दीव्यतां सर्वदा 07 — प्रो. शिवशङ्करमिश्रः

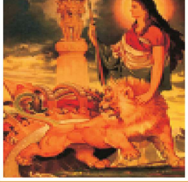

कोरोनाव्याधिनिवारण में योग का प्रभाव 11 — विजय गुप्ता

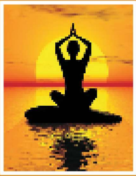

10 डॉ. गोस्वामी गिरिधारी लाल शास्त्री द्वारा विरचित फलित ज्योतिष-विवेचनात्मक बृहत्पाराशर समीक्षा

14 कृष्णावतार का वैशिष्ट्य — डॉ. श्रीमती कृष्णा जैन

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 18)

भारते भारती दीव्यतां सर्वदा

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः
शोधविभागाध्यक्षः,
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
(नवदेहली)

संस्कृतं विश्वस्य प्राचीनतमा समृद्धा, शास्त्रीया च भाषा इति बहुधा विवेचितं भाषावैज्ञानिकैः। संस्कृतवाङ्मयं विश्वसाहित्यवाङ्मये अद्वितीयं स्थानं बिभर्ति। संस्कृतभाषायाः सुरभारती, देववाणी, दैवीवाक्, गीर्वाणवाणी, देवभाषा, अमरभारती इत्यादीनि बहून्यभिधानानि प्रसिद्धानि सन्ति। इयं मधुरा, दिव्या च वर्तते अत एवोक्तम्–

भाषासु मधुरा मुख्या दिव्या
गीर्वाणभारती ।
तत्रापि मधुरं काव्यं तस्मादपि
सुभाषितम् ॥

संस्कृतभाषायाः व्याकरणमत्यन्तं विशदं सूक्ष्मं च विद्यते। एतद्व्याकरणमाश्रित्य जनाः अन्याः सर्वाः भाषाः ज्ञातुं प्रभवन्ति। महर्षिपाणिनि-विरचितः "अष्टाध्यायी" ग्रन्थः जगतः सर्वासां भाषाणां व्याकरणग्रन्थेषुष्वन्यतमः वैयाकरणानां भाषाविदां भाषाविज्ञानिनां च प्रेरणाप्रदो वर्तते। भारतीयासु समस्तासु भाषासु बाहुल्येन संस्कृतशब्दाः समुपलभ्यन्ते। संस्कृतादेव प्रायः सर्वा अपि भारतीयभाषाः समुद्भूताः। संस्कृतभाषायाः शब्दाः सर्वासु आधुनिक-भारतीयभाषासु सम्प्राप्यन्ते। सर्वासु भारतीयभाषासु एकतायाः संरक्षणं संस्कृतमाध्यमेनैव भवितुं शक्यते। दक्षिणभारतीयाः भाषाः संस्कृतेन अत्यन्तं सान्निध्यं भजन्ते। आंग्लभाषायामपि अनेके शब्दाः संस्कृतभाषया समुद्भुतास्सन्ति। जर्मनभाषा, ग्रीकभाषा, लैटिनभाषाऽपि चानया प्रभाविता। यथा संस्कृते मातृशब्दः आंग्लभाषायां मदर (Mother) पदेन, भ्रातृशब्दः ब्रदर (Brother) पदेन, स्वसृशब्दः सिस्टर शब्देन, दुहितृ शब्द डाटर (Daughter) पदेन व्यपदिश्यते, एवमेव सप्तन् सेवेन शब्देन, अष्टम् (Eight) एट शब्देन, नवम् नाइन (Nine) शब्देन, द्वारम् डोर पदेन च व्यवह्रियते। एवं-प्रकारेण आंग्लभाषायाः सहस्रशोऽप्यधिकाः शब्दाः एवं सन्ति येषां मूलस्वरूपं संस्कृते द्रष्टुं शक्नुमः। भाषाविज्ञान-दृष्ट्या संस्कृतं सर्वथा समृद्धं, सर्वाः अपि भाषाः अनया उपकृता सन्ति। अतएवोच्यते- **संस्कृतं सर्वासां भाषाणां जननी** इति। विश्वस्मिन् यावत्यः भाषाः विलसन्ति तासु सप्तनवतिः परिमितायाः भाषायाः बहव्यः शब्दाः संस्कृतेन विनिर्मिताः प्रभाविताश्च विद्यन्ते।

संस्कृतभाषायाः विपुलं साहित्यं विशदञ्च व्याकरणं महांश्च शब्दकोशो विद्यते अस्यां भाषायां 102 अर्बुद 78 कोटि 50 लक्ष (लक्ष) शब्दाः प्राप्यन्ते। ऋग्वेदादयः चत्वारो वेदाः संस्कृतभाषायामुपनिबद्धाः, पुराणान्यपि संस्कृत-भाषायां विलिखितानि, संस्कृतमाश्रित्य एव षडदर्शनसूत्राणि, व्याकरण-काव्य-नाट्य-नाटकादीनि पल्लवितानि। संस्कृत-साहित्ये भारतस्य भारतीयानाञ्च जीवनं सुस्पष्टतया द्रष्टुं शक्यते। संस्कृतमस्माकं जीवने पदे-पदे साहाय्यं करोति। अस्माकं व्यवहारः कथं भवेत्? अस्माकमाचारः कथं भवेत्? श्रेष्ठजनान् प्रति कीदृशमस्माकमाचारणम्? मातरं प्रति, पितरं प्रति, आचार्यं प्रति, भ्रातरं प्रति, भगिनीं प्रति वा अस्माकं कीदृशो व्यवहारो भवेदिति? धसंस्कृतमेव साधुत्वेन शिक्षयति। मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव। अतिथिदेवो भव। इति वेदोक्तमानवानां सदाचरणपद्धतिः व्यवहारसरणिश्च।

संस्कृतभाषाविषये एका भ्रान्तिः प्रसारिता संस्कृतभाषाविरोधिभिः असंस्कृतज्ञैः। तैरुच्यते इयं कर्मकाण्डस्य भाषाऽस्ति। कैश्चिदेवमुच्यते यदियं जातिविशेषस्य वर्गविशेषस्य च कृत एव विनिर्मिता, नहि एतावदेव अपितु संस्कृतस्य गौरवमजानन्तः आंग्लभाषाप्रभावेण प्रभाविताः अभिभूताश्च केचन केवलं वाह्यकलेवरेण भारतीयाः भाषया तु वैदेशिकाः एवं वदन्तो

Website : aisanskritsahityasammelan.com

E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

ISSN 2395-3055

मार्च-अप्रैल, 2021 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

।। सर्वसिद्धिप्रदः कुम्भः ।।

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)

संस्कृत भवन, ए-10, कुतुब संस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,

नई दिल्ली - 110067

वर्ष : 7 अंक : 10 (82)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व : अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)

अध्यक्ष : प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय
अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन

प्रधान सम्पादक (पदेन) : रमाकान्त गोस्वामी

सम्पादक : प्रो. शिवशङ्कर मिश्र

शोधपत्रपरीक्षक मण्डल : प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली)
प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर)
प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली)
प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी)
प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)

व्यवस्थापक मण्डल : आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'

ग्राफिक डिजाईनर : विश्वकर्मा शर्मा

संपादकीय कार्यालय : संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसिफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67

संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक : रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.स. सा.स.

दूरभाषा : 011-41552221, मो.- 9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com

E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए संस्कृत रत्नाकरः जिम्मेदार नहीं है।

विषय सूची

03 । शास्त्रीय कुम्भतत्त्वमीमांसा
– प्रो. शिवशंकर मिश्र

12 । कुम्भ कथा : तत्त्वज्ञान एवं माहात्म्य
– प्रो. शिवशंकर मिश्र

15 । भारतीय संस्कृति के धार्मिक महापर्व कुम्भ की आधुनिक सन्दर्भ में उपादेयता – विजय गुप्ता

सम्पादकीयम्

भारतीयसंस्कृतौ सनातनपरम्परायाञ्च कुम्भपर्वणो विद्यतेऽपरिमितं महत्त्वम्। इयमस्ति दृढ़ा भावना भारतीयानां यत् कुम्भपर्वप्रसङ्गे गंगायां निमज्जनेन, गोदावर्यामवगाहनेन, शिप्रायामाचमनेन च सिद्ध्यति परमकल्याणलाभः। सहस्रेभ्यः वर्षेभ्यः प्रागेव निरन्तरं जनाः श्रद्धया कुम्भतीर्थं समागत्य स्नान-दर्शन-पूजनादिना च आत्मानं धन्यमनुभवन्ति।

प्रतिद्वादशवर्षानन्तरं प्रयागे, हरिद्वारे, नासिके, उज्जयिन्याञ्च कुम्भयोगः समायाति। अवसरेऽस्मिन् देशस्य चतुर्भ्यः कोणेभ्यः देशाद्देशान्तरेभ्यश्च शैवाः, वैष्णवाः, सन्यासिनः वैरागिणः, उदासीनाः, निर्मलमतानुयायिनः, गरीबदाससम्प्रदायावलम्बिनः, योगिनः, विविध-सम्प्रदायसिद्धाः सन्तमहात्मानः, भक्ताः, तपस्विनश्च समवेताः भवन्ति। कुम्भस्य विद्यते एतद्प्रभावः यत् सुदूरपर्वतोपत्यकायां तपस्यारतः कश्चन तपस्वी, योगरतः कश्चन योगी, ज्ञानरतः कश्चिज्ज्ञानी, हिमालयस्य उत्तुंगशिखरे साधनारतः समाधिस्थः कश्चन साधकोऽपि कुम्भस्नानजन्यपुण्यार्जनाय सश्रद्धं सोल्लासं समागच्छन्ति।

एकादशवर्षोत्तरैकादशमासं यावत् विलुप्ताः, क्लेशेन दृश्यमानाः नागासन्यासिनोऽपि लक्षशोऽप्यधिकसंख्यायां कुतः सहसा प्रकटीभवन्ति इति महदाश्चर्यं प्रतिभाति।

कुम्भपर्वणो महत्त्वं न केवलं धार्मिकमेवापितु एतस्याध्यात्मिकं, सामाजिकं, सांस्कृतिकं, वौद्धिकम्, आर्थिकञ्च महत्त्वमपि विद्यते। प्रतिद्वादशे वर्षे विविधमतावलम्बिनोऽत्र समागत्य राष्ट्रस्य कथमुन्नतिः, प्रगतिश्च भवेत्, कथं समग्रे विश्वे शान्तिः, समरसता च भवेत्, कथं जनाः सुसंस्कृताः राष्ट्रभक्ताश्च भवेयुरित्येतत्सर्वं बारम्बारमालोडयन्ति मन्थनञ्च कुर्वन्ति चिन्तकाः। ततः समुद्भूतं सिद्धान्तनवनीतं राष्ट्रकल्याणाय, मानवचरित्रनिर्माणाय, जनेषु मूल्यसंस्थापनाय सर्वत्र प्रसारयन्ति प्रतिष्ठापयन्ति च।

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः,
शोधविभागाध्यक्षः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालय

18 । भारतीय पर्व का प्रतीक कुम्भ : स्रोत एवं सन्दर्भ – निराली

20 । योगस्याधुनिकलोकजीवने प्रभावः
– डॉ. कृपा शंकर मिश्र

शास्त्रीय कुम्भतत्त्वमीमांसा

प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
शोधविभागाध्यक्ष
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली-१६

मनुष्य मर्त्य लोक का प्राणी होकर भी स्वभावत: अमरता का आकांक्षी है। अज्ञानता के कारण वह यह नहीं जानता कि अमृतत्व सर्वत्र भरपूर है। कोई कण कोई क्षण ऐसा नहीं है, जिसके अंतराल में अमृत का परमानन्ददायी शान्त स्रोत लहराता न हो। अमृततत्व प्राप्ति का वास्तविक तात्पर्य है-जीवन की पूर्णता अर्थात् मानव जीवन का सर्वांगीण विकास। यह प्रत्येक देश में प्रत्येक काल में प्रत्येक मनुष्य के लिये अपेक्षित है, इस अपेक्षा की पूर्ति में इस अमृतकुम्भ का महान् योग और उपयोग है। अन्त:परिशुद्धि या चित्तनिर्माण के इस चिरन्तन सत्य और अमृतोपम संदेश को जन-जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से ही हमारे प्राचीन भारतीय मनीषियों, तप:पूत ऋषियों ने लोककल्याण तथा लोकमंगल की पुनीत भावना से प्रेरित होकर प्रति द्वादशवें वर्ष शास्त्रानुमोदित तीर्थराजप्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक इन चार पवित्र स्थानों में महाकुम्भ पर्व के अयोजन का विधान किया है।

पुरातत्त्व काल में तत्त्वविज्ञ मनीषियों, ऋषियों तथा महर्षियों द्वारा मुक्तिकामना एवं लोककल्याण की शुभभावना से प्रेरित होकर गंगा, यमुना, गोदावरी, नर्मदा, शिप्रा आदि नदियों के तटों तथा प्रयाग, हरिद्वार आदि पवित्र स्थानों पर ज्ञान सत्र का अयोजन, धर्मचर्चा एवं भगवच्चरित्र का श्रवण प्रसंग एकतरफ जहाँ हमारी आध्यात्मिक परम्परा के द्योतक हैं वहीं दूसरी ओर वर्तमान जगत् के लिये प्रेरणादायक भी हैं।

धर्मार्थकाममोक्ष ये चतुर्विध पुरुषार्थ मानव जीवन के लक्ष्य हैं, इनकी प्राप्ति के विविध साधन हैं। धर्म साध्य साधना उभयस्वरूप है, जबकि काम साध्य के रूप में तथा मोक्ष परम साध्य के रूप में वर्णित है। भारतीय मनीषियों ने भेदभावना से शून्य कर्तव्य और आधिकारिक योग्यता के अनुसार चतुर्विध फल प्राप्त करने की अभिलाषा वालों के लिये सक्षम साधनों का वर्णन किया है। ये साधन भौतिक तथा आध्यात्मिक हैं। यद्यपि भौतिक में भी अध्यात्म दृष्टि रहती है और अध्यात्म में भी बिना भौतिक उपकरण के गति संभव नहीं है फिर भी मुख्य और गौण की दृष्टि से यह विभेद किया गया है। जिस प्रकार शिक्षक होने के लिये विद्या को पढ़ना होगा और कार्यालय के लिपिक होने के लिये भी शिक्षा का होना आवश्यक है किंतु विद्या (ज्ञान) की शिक्षा देने के लिये सामान्य शिक्षा से अतिरिक्त जिस विषय की शिक्षा देनी होगी उसका गंभीरतम ज्ञान प्राप्त करना अनिवार्य है। लिपिक होने की व्यावहारिक कुशलता की शिक्षा पृथक् है किन्तु सामान्य रूप से शिक्षा दोनों के लिये आवश्यक है। ठीक इसी प्रकार जो अध्यात्म साधना को स्वीकार करने के अभिलाषु हैं उनको भी शरीर की स्वस्थता, मानसिक शुद्धता तथा साधना में तीव्रता लाने के लिये सात्त्विक तथा भौतिक उपकरणों की उपलब्धि आवश्यक है। इसी प्रकार भौतिक साधनों का उपयोग करने वालों को भी मेरे ये भौतिक साधन आत्मा के कल्याण के लिये है न कि दूसरों की आत्मा की प्रतिकूलता के लिये; यह अध्यात्म विचार रखना ही होगा। अस्तु इस प्रकार अध्यात्म तथा भौतिक उभय मिश्रित संसाधनों का उल्लेख हम वेद, पुराण, रामायण, महाभारत, स्मृति आदि ग्रन्थों में पाते हैं कर्म, ज्ञान तथा उपासना के रूप में। तथा कर्म को यज्ञ, दान, तप के रूप में। यज्ञ, दान, तप: कर्म की विशद या यों कहें इनका समन्वय मकर संक्रान्ति, मेष संक्रान्ति, माघ स्नान वैशाख स्नान, श्रावणव्रत, एकादशीव्रत, शिवरात्रिव्रत, रामनवमी, जन्माष्टमी, नवरात्र आदि के रूप में प्रयाग, काशी, अयोध्या, मथुरा, वृन्दावन, चित्रकूट, परशुरामकुण्ड, गंगासागर, रामेश्वर, हरिद्वार, उज्जैन, नासिक, जगन्नाथ धामादि के रूप में, गंगा, यमुना, नर्मदा, सरयू, नारायणी आदि नदियों के रूप में, पुष्कर, नारायण सरोवर, चक्रतीर्थ, भरतकुण्ड, सूर्यकुण्ड आदि के रूप में होने वाले विशेष पर्वो से लक्षित होता है।

ISSN 2395-3055

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

ISSN 2395-3055

मार्च–अप्रैल, 2021 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

।। सर्वसिद्धिप्रदः कुम्भः ।।

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)
संस्कृत भवन, ए-10, कुतुब संस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली – 110067

वर्ष : 7 अंक : 10 (82)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व	:	अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)
अध्यक्ष	:	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय अखिल भारतीय सस्कृत साहित्य सम्मेलन
प्रधान सम्पादक (पदेन)	:	रमाकान्त गोस्वामी
सम्पादक	:	प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
शोधपत्रपरीक्षक मण्डल	:	प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली) प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर) प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली) प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी) प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)
व्यवस्थापक मण्डल	:	आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'
ग्राफिक डिजाईनर	:	विश्वकर्मा शर्मा
संपादकीय कार्यालय	:	संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसिफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67
संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक	:	रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.स. सा.स.
दूरभाषा	:	011-41552221, मो.- 9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com

E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए संस्कृत रत्नाकरः जिम्मेदार नहीं है।

सम्पादकीयम्

भारतीयसंस्कृतौ सनातनपरम्परायाञ्च कुम्भपर्वणो विद्यतेऽपरिमितं महत्त्वम्। इयमस्ति दृढ़ा भावना भारतीयानां यत् कुम्भपर्वप्रसङ्गे गंगायां निमज्जनेन, गोदावर्यामवगाहनेन, शिप्रायामाचमनेन च सिद्ध्यति परमकल्याणलाभः। सहस्रेभ्यः वर्षेभ्यः प्रागेव निरन्तरं जनाः श्रद्धया कुम्भतीर्थं समागत्य स्नान-दर्शन-पूजनादिना च आत्मानं धन्यमनुभवन्ति।

प्रतिद्वादशवर्षानन्तरं प्रयागे, हरिद्वारे, नासिके, उज्जयिन्याञ्च कुम्भयोगः समायाति। अवसरेऽस्मिन् देशस्य चतुर्भ्यः कोणेभ्यः देशाद्देशान्तरेभ्यश्च शैवाः, वैष्णवाः, सन्यासिनः वैरागिणः, उदासीनाः, निर्मलमतानुयायिनः, गरीबदाससम्प्रदायावलम्बिनः, योगिनः, विविध-सम्प्रदायसिद्धाः सन्तमहात्मानः, भक्ताः, तपस्विनश्च समवेताः भवन्ति। कुम्भस्य विद्यते एतद्प्रभावः यत् सुदूरपर्वतोपत्यकायां तपस्यारतः कश्चन तपस्वी, योगरतः कश्चन योगी, ज्ञानरतः कश्चिज्ज्ञानी, हिमालयस्य उत्तुंगशिखरे साधनारतः समाधिस्थः कश्चन साधकोऽपि कुम्भस्नानजन्यपुण्यार्जनाय सश्रद्धं सोल्लासं समागच्छन्ति।

एकादशवर्षोत्तरैकादशमासं यावत् विलुप्ताः, क्लेशेन दृश्यमानाः नागासन्यासिनोऽपि लक्षशोऽप्यधिकसंख्यायां कुतः सहसा प्रकटीभवन्ति इति महदाश्चर्यं प्रतिभाति।

कुम्भपर्वणो महत्त्वं न केवलं धार्मिकमेवापितु एतस्याध्यात्मिकं, सामाजिकं, सांस्कृतिकं, वौद्धिकम्, आर्थिकञ्च महत्त्वमपि विद्यते। प्रतिद्वादशे वर्षे विविधमतावलम्बिनोऽत्र समागत्य राष्ट्रस्य कथमुन्नतिः, प्रगतिश्च भवेत्, कथं समग्रे विश्वे शान्तिः, समरसता च भवेत्, कथं जनाः सुसंस्कृताः राष्ट्रभक्ताश्च भवेयुरित्येतत्सर्वं बारम्बारमालोडयन्ति मन्थनञ्च कुर्वन्ति चिन्तकाः। ततः समुद्भूतं सिद्धान्तनवनीतं राष्ट्रकल्याणाय, मानवचरित्रनिर्माणाय, जनेषु मूल्यसंस्थापनाय सर्वत्र प्रसारयन्ति प्रतिष्ठापयन्ति च।

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः,

शोधविभागाध्यक्षः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालय

विषय सूची

03। शास्त्रीय कुम्भतत्त्वमीमांसा
- प्रो. शिवशंकर मिश्र

12। कुम्भ कथा : तत्त्वज्ञान एवं माहात्म्य
- प्रो. शिवशंकर मिश्र

15। भारतीय संस्कृति के धार्मिक महापर्व कुम्भ की आधुनिक सन्दर्भ में उपादेयता - विजय गुप्ता

18। भारतीय पर्व का प्रतीक कुम्भ : स्रोत एवं सन्दर्भ - निराली

20। योगस्याधुनिकलोकजीवने प्रभावः
- डॉ. कृपा शंकर मिश्र

कुम्भ कथा

तत्त्वज्ञान एवं माहात्म्य

प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
शोधविभागाध्यक्ष
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली-१६

धन्यानां पुरुषाणां हि गंगाद्वारस्य दर्शनम्।
विशेषस्तु मेषार्के संक्रमेऽतीव पुण्यदे॥
देवदानवयोर्मध्ये मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्।
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवा सर्वे त्वयि स्थिता:॥
शिव: स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापति:।
आदित्या वसवो रूद्रा विश्वे देवा सपैतृका:॥
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यत: कामफलप्रदा:।
त्वत्प्रसादादिमं स्नानं कर्तुमीहे जलोद्भव॥
सान्निध्यं कुरू मे देव! प्रसन्नो भव सर्वदा।
॥ कुम्भाय नम:॥

पुराणों में वर्णित कुम्भतीर्थ हरिद्वार

पद्मिनी नायके मेषे कुम्भराशिगते गुरौ।
गंगाद्वारे भवेद् योग: कुम्भनामा तदोत्तम:॥
कुम्भोद्वारहरे: पुनीत सरिता तीरे च भव्यो महान्,
वर्षैर्द्वादशमंजुलैर्युगसमैर्सम्पाद्यमानो बुधै:।
गंगाया: सलिले त्रितापगलिते सर्वार्थसिद्धि: प्रदे,
कुम्भेऽस्मिन्शुभमंगले निजहितं कुर्वन्ति सर्वे जना:॥

पुराणों में प्रसंग आया है कि देवताओं के वर्षों के क्रम से द्वादश सहस्र वर्षों का चतुर्युग काल होता है। चतुर्युगीय सर्वार्थसिद्धि की भावना से द्वादश वर्षीय कुम्भ की धार्मिक एवम् आध्यात्मिक मान्यता महर्षियों ने प्रदान की है। बारह वर्षों में तीन-तीन वर्षो के अन्तराल में चारों तीर्थों में चारों कुम्भ सम्पन्न होते हैं। ज्योतिषियों की ग्रह गति की गणना से न्यूनाधिक होने पर भी प्रत्येक तीन वर्ष के अन्तराल में हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन, व नासिक में कुम्भों का अयोजन प्रचलित है। कुम्भ शब्द का वाच्यार्थ घट है। घट को कार्य मानकर कार्य कारण की व्यवस्था में भेद, अभेद, भेदाभेद की महती व्यापक दृष्टि विविध दार्शनिकों की है। घट पदार्थ है, द्रव्य है, कार्य है। कुलाल इसका कर्ता है इसी के आधार पर नैयायिकों ने ''नम: कुलालाय'' इस श्रुति वाक्य के अनुसार ईश्वर का अनुमान किया है। वस्तुत: कुम्भ सदृश महायुगीय आयोजनों में इन्ही गूढ रहस्यमय दार्शनिक विषयों का विमर्ष हो, तथा बड़े-बड़े मनीषी आत्मद्रष्टा चिन्तक एवं बुद्धि के द्वारा सूक्ष्मातिसूक्ष्म तत्त्व पर सैद्धान्तिक निष्कर्ष निकालने वाले बुद्धिजीवी इसमें अपना अद्भुत योगदान देते थे। यह तो दार्शनिक सन्दर्भ की बात हुयी। श्रेय: प्रेय: की लिप्सु जनता इन कुम्भ क्षेत्रों में आकर स्नान, दान, दर्शन, एवं प्रवचन श्रवण से तथा कल्पवास से अपने अभीष्ट की प्राप्ति की भावना से पुण्य कार्य करती थी, जो कि निष्कर्षत: कुम्भ का सार्थक्य है।

कुम्भ के इतिहास पर भी एक दृष्टि डाली जाय तो एक प्रेरणा की भावना प्राप्त होती है भारतीय पुराणों के मंथन से ज्ञात होता है कि देवता और दैत्यों में जन्मजात वैर विराम हेतु समझौता हुआ। दोनों ने मिलकर समुद्र मंथन कर अमृत प्राप्त कर उसका पान कर अमर होने की योजना बनायी। यद्यपि शारीरिक दृष्टि से दैत्य बलवान व तितिक्षु थे। ब्रह्मा के पुत्र मरीचि, मरीचि के पुत्र कश्यप, कश्यप के ही पुत्र दैत्य एवं देवता दोनों है। देवता सात्त्विक स्वभाव होने के कारण स्वर्ग के अधिकारी हुये। शतक्रतु पुरन्दर स्वर्ग का राजा था, उसकी शोभा बढ़ाने वाली समस्त विभूतियाँ थीं। दिक्पाल, लोकपाल, ग्रहपाल, वर्षपाल, यज्ञपाल, आदि जितने भी उपयोगी विभाग थे उन सब पर देवताओं का ही

 ISSN 2395-3055

UGC CARE List (Arts and Humanities) [illegible] UTTMUL00029 ISSN 2347 [illegible]

शोधप्रज्ञा

Śodha-prajñā

अर्द्धवार्षिकी, [illegible] शोधपत्रिका

Biannual, [illegible] Reviewed and
UGC CARE Listed [illegible] Journal

वर्षम् [illegible]

प्रधानसम्पादकः

प्रो० [illegible]

कुलपतिः

सम्पादकः

डॉ. प्रकाशचन्द्रपन्तः

प्रकाशकः

उत्तराखण्डसंस्कृतविश्वविद्यालयः

[illegible]म्

शोधप्रज्ञा

Śodha-prajñā

अर्द्धवार्षिकी, अन्ताराष्ट्रिया, मूल्याङ्किता, समीक्षिता च शोधपत्रिका

Biannual, International, Refereed / Peer Reviewed and
UGC CARE Listed (Arts & Humanities) Research Journal

वर्षम् - नवमम् अङ्कः - अष्टादशः जूनमासः - २०२२

प्रधानसम्पादकः

प्रो. दिनेशचन्द्रशास्त्री

कुलपतिः

सम्पादकः

डॉ. प्रकाशचन्द्रपन्तः

प्रकाशकः

उत्तराखण्डसंस्कृतविश्वविद्यालयः, हरिद्वारम्

उत्तराखण्डम्

UGC CARE Listed (Arts and Humanities) ISSN 2347-8892

शोधप्रज्ञा

अर्द्धवार्षिकी, अन्ताराष्ट्रिया, मूल्याङ्किता, समीक्षिता च शोधपत्रिका

संरक्षकौ

आचार्यः बालकृष्णः

आनन्दपीठाधीश्वरः महामण्डलेश्वरः स्वामी बालकानन्दः

परामर्शदातृसमितिः

प्रो. [illegible]

प्रो. [illegible]कुमारः

प्रो. शशितिवारी

प्रो. श्रीनिवासः वरखेड़ी

प्रो. सत्यपालसिंहः

प्रो. सुनीलकुमारजोशी

प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः

प्रो. हरेरामत्रिपाठी

प्रो. ओमप्रकाशसिंहनेगी

प्रो. रमेशकुमारपाण्डेयः

डॉ. शिवशंकरजायसवालः

डॉ. यशवीरसिंहः

डॉ. सुधीरसिंहः

डॉ. अपर्णा धीरः

सम्पादकमण्डलम्

डॉ. [illegible]

डॉ. [illegible]

डॉ. [illegible]

डॉ. [illegible]

डॉ. [illegible]

डॉ. [illegible]

शोधलेखमूल्यांकनसमितिः

डॉ. [illegible]

डॉ. [illegible]

डॉ. [illegible]

डॉ. [illegible]

प्रबन्धसम्पादकः

श्रीगिरीशकुमारः अवस्थी

वित्तव्यवस्थापकः

[illegible]

टंकणकर्ता

जितेन्द्रसिंहः

Shodh Pragya
UGC CARE Listed (Arts and Humanities)
(Half-Yearly, International Refereed & Peer Reviewed Research Journal of
Uttarakhand Sanskrit University)

Chief Editor : Prof. Dinesh Chandra Shastri

Editor : Dr. Prakash Chandra Pant

Editors
Prof. Dinesh Chandra Chamola
Dr. Pratibha Shukla
Dr. Shailesh Kumar Tiwari
Dr. Laxmi Narayan Joshi
Dr. Manoj Kishor Pant
Dr. Umesh Kumar Shukla

Reviewer
Prof. Ganesh Datt Bhardwaj
Prof. Shiv Shankar Mishra
Dr. Shailesh Kumar Tiwari
Dr. Suman Prasad Bhatt

Managing Editor
Shri Girish Kumar Awasthi

Finance Controller
Shri Lakhendra Gothyal

We are bound to grant an international platform for researchers in the area of Sanskrit Studies. We welcome the papers related to Sanskrit Studies including all the fields like veda, Vedic Sahitya, Darshan, Sanskrit Poetics, Sanskrit Literature, Sanskrit Grammar, Epics, Puranas, Jyotish, Comparative literature, Interdisciplinary and Oriental Studies. We would like to encourage papers related to Ancient Indian Sciences and Philosophy.

We invite authentic, scholarly and unpublished research papers for publication. Research papers submitted for publication will be evaluated by the refrees of the Journal and only those which receive favourable comments, will be published and the author will be informed.

RNI : UTTMUL00029 ISSN : 2347-4892
© Uttarakhand Sanskrit University, Haridwar, Uttarakhand, India

Subscription Charges
Rs. 100/- Single copy Rs. 200/- Annual Rs. 1000/- Five Years

The views expressed in the publication are the individual opinion of the author(s) and do not represent or reflect the opinion of the Editor and Editorial board nor subscribe to these views in any way. All disputes are subject to jurisdiction of the District Court Haridwar Uttarakhand only.

Editor-in-Chief

For Subscription and related enquiries feel free to contact :

The Managing Editor
Shodh Pragya
Uttarakhand Sanskrit University
Bhadrabad, Haridwar - 249402
(Uttarakhand) India.

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	नाम	पृष्ठ सं.
1.	अर्थापत्तिप्रमाणविषयकशाब्दिकसिद्धान्तविमर्शः	डॉ. शैलेशकुमारः तिवारी	01
2.	भारतीयविद्यायाः पद्धतिः प्रयोजनं च	प्रो. शिवशंकरमिश्रः	06
3.	वैदिकवाङ्मये नैतिकतत्त्वम्	डॉ. वर्णाली बरठाकुरः	13
4.	वैदिकसाहित्ये नारी	प्रियदर्शिनी ओली	15
5.	गुमानीकविविरचितभक्तिविज्ञप्तिसारस्य काव्यशास्त्रीयसमीक्षा	डॉ. कंचनतिवारी	26
6.	संस्कृतमहाकाव्यपरम्परायां वनौषधिविचारः	डॉ. ललितपाण्डेयः	29
7.	उपनिषत्सु प्रकृतिस्वरूपविमर्शः	डॉ. मोहनलालशर्मा	39
8.	पाणिनीये प्रत्ययदर्शनम्	डॉ. दामोदरपरगाँई राकेश कुमारः	42
9.	संस्कृतसाहित्ये राजधर्मः	डॉ. प्रकाशचन्द्रपन्तः	46
10.	वेदानुशीलने शिक्षावेदाङ्गस्य महत्त्वम्	डॉ. पवनकुमारपाण्डेयः	56
11.	उपनिषत्सु गुरुशिष्यसम्बन्धः	डॉ. नरेन्द्रकुमारपाण्डेयः	60
13.	भारतीयसंस्कृतौ कर्मकाण्डस्य महत्त्वम्	डॉ. नीरजकुमारजोशी	64
14.	राघवीयमहाकाव्ये प्रकृतिचित्रणम्	सतानन्दशर्मा	72
15.	पुराणदृष्ट्या मोक्षस्वरूपविमर्शः	सौम्या.के	75
16.	भार्गवराघवीयमहाकाव्ये महाकविरामभद्राचार्यस्य स्वाभिनवभाष्यनैपुण्यम्	डॉ. लक्ष्मीकांतपडड्गी	79
18.	नैषधचरितालोके वैदिकदेवस्य स्वरूपम्	टुम्पा जाना	81
19.	चूडाकर्मसंस्कारस्य महत्त्वं वैज्ञानिकचिन्तनं च	आशुतोषमणित्रिपाठी	90
12.	रामायणे भावध्वनिविचारः	डॉ. अनिलकुमारः	94
27.	स्वामिविवेकानन्दस्य भावनया अनूदितसंस्कृतसाहित्यस्य...	डॉ. सुनीता बर्मन्	100
20.	परामर्शे तार्किकरक्षाभाषापरिच्छेदग्रन्थयोः समीक्षणम्	प्रणवेशभट्टाचार्यः	105
21.	राष्ट्रीय जागरण और आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की पत्रकारिता	डॉ. सुशील उपाध्याय डॉ. उमा शर्मा	110
22.	मानव जीवन में दार्शनिक विद्याओं की महत्ता	किरण कुमार आर्य	115
24.	व्यक्तित्व विकास हेतु चित्त प्रसादन की उपयोगिता	डॉ. सुरेन्द्र प्रसाद रयाल	120
26.	मालवा सम्राट विक्रमादित्य का उत्तराखण्ड	डॉ. अजय परमार	126

भारतीयविद्यायाः पद्धतिः प्रयोजनं च

प्रो० शिवशंकरमिश्रः
शोधविभागाध्यक्षः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
नवदेहली

"उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम् वर्षं तद् भारतं नाम" इति परिचयेण प्रतिष्ठितमस्माकमिदं भारतं पुरा "विश्वगुरुः" आसीदिति साहंकारं सगौरवं च वदन्ति अस्माकं ऐतिह्यविदो भारतीयाः। विश्वगुरुत्वन्नाम निखिलेऽस्मिन् विश्वे विद्यमानानां मानवानां पथप्रदर्शकत्वम् परमार्थबोधकत्वं च। तच्च पथप्रदर्शनं नहि ज्ञानमन्तरा सम्भवति। ज्ञानमेव प्रकाशयति जीवनस्य विविधान् पक्षान्। ज्ञानमेव प्रापयति अस्माकं प्रत्यक्षं परोक्षञ्च लक्ष्यम्। अतः सकलमनोरथलाभे ज्ञानमेव परमं साधनं प्रसिद्ध्यति। एतेनेदं वक्तुं शक्यते यद् भारतस्य विश्वगुरुत्वे मूलं नियामकं ज्ञानमेव। भारतीय–ऋषीणां महर्षीणां च ज्ञानवैभवादेवायं देशः विश्वगुरुपदवीं प्राप्तवान्। अस्माकं शास्त्रेषु ज्ञानं ब्रह्माऽपरपर्यायरूपेण वर्णितम्। श्रुतिरपि वदति–

- सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म
- सच्चिदानन्द ब्रह्म।

सृष्टेः चराचरप्राणिषु श्रेष्ठतायाः विनियामकं ज्ञानमेव। अत एव ये विशुद्धमतिमन्तो जनास्ते सर्वत्र वन्द्यन्ते? "स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते" इति वचनं बहुधा सुप्रसिद्धम्। अस्माकं शास्त्राणि सुभाषितानि च ज्ञानस्य महत्त्वं पदे–पदे एव ब्रुवन्ति–

- विद्ययाऽमृतमश्नुते। विद्यया विन्दतेऽमृतम्।
- सा विद्या या विमुक्तये। ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः।
- ज्ञानं तृतीयं मनुजस्य नेत्रम्।
- तमसो मा ज्योतिर्गमय।
- विद्याविहीनः पशुः।
- साहित्यसंगीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः।
- येषां न विद्या न तपो न दानं ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।

अत्र शिक्षा पदं विद्याऽपरपर्यायभूतम्। यतः शिक्षायाः व्युत्पत्तिः **"शिक्ष्यते विद्योपादीयते अनया इति शिक्षा"**। अर्थात् अत्र शिक्षा नाम विद्या एव। वेदाङ्गघटिता या शिक्षा तस्याः व्युत्पत्तिः सायणेन एवं विहिता–

स्वरवर्णादि उच्चारणप्रकारो यत्र शिक्ष्यते उपदिश्यते सा शिक्षा। तैत्तरीयोपनिषदः शाङ्करभाष्ये एवम्–

शिक्षा शिक्षतेऽनयेति वर्णाद्युच्चारणलक्षणम्। शिक्ष्यन्त इति वा वर्णादयः।

भारतीयशिक्षणपरम्परायाः परिचयाय प्रथमं भारते प्रसिद्धाः काः? काः? विद्या इत्यवश्यमवधेयम्। प्राचीनभारते गुरुकुलानि विद्याकेन्द्राणि भवन्ति स्म। बालकाः गुरुकुलं गत्वा तत्र गुरूणामाज्ञया कार्यमाचरन्तः विद्याध्ययनं कुर्वन्ति स्म। अत्र गुरुकुले समेऽपि बालाः समानाः, समेषां कृते समानं विद्याध्ययनावसराः, समानो विद्याध्ययनविधिः स राजपुत्रो वा भवतु, धनिकस्य पुत्रो वा भवतु सामान्यजनस्य वा पुत्रो भवतु समेषां कृते समानविद्यालाभः। यत्र नन्दनन्दनः श्रीकृष्णः पठति तत्रैव सुदामा अपि पठति। यद्यपि कुत्रचिदेतस्य अपवादोऽपि

RNI-UTTHIN/2013/51284

ISSN-0975-8739

हिन्दी अर्द्धवार्षिक

जयराम संदेश

Jairam Sandesh

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत विशेषज्ञ समिति द्वारा मूल्यांकित शोध-पत्रिका

A Peer Reviewed, Refereed Research Journal

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम विशेषांक

जून 2023 वर्ष 11 अंक 01

₹ 50/-

धर्म-दर्शन-अध्यात्म एवं सांस्कृतिक संदर्भ पर आधृत

हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

RNI-UTTHIN/201

धर्म-... ...स्कृतिक संदर्भ पर आधृत

A Peer R... ...eed Research Journal

...री–जून
...023 ई.
... सम्वत् 2080

वर्ष : ... अंक : 01

संरक्षक :

प... ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी

पर... ...यक्ष : जयराम संस्थाएँ

**

परामर्शदातृ मण्डल

प्रो० वशिष्ठ त्रिपाठी (वाराणसी)
डॉ० रामभद्रदास श्रीवैष्णव (प्रयाग)
प्रो० रमेश कुमार पाण्डेय (दिल्ली)
प्रो० हरेराम त्रिपाठी (दिल्ली)
प्रो० रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर)

**

सम्पादक

डॉ. शिवशङ्कर मिश्र

मोबाइल नं. 9456328499
ई-मेल : shivshankarmishra74@gmail.com

**

शोधपत्र परीक्षक मण्डल

प्रो० जे.के. गोदियाल (पौड़ी)
प्रो० राम बहादुर शुक्ल (जम्मू)
डॉ० रामनारायण द्विवेदी (दिल्ली)
डॉ० दिनेश कुमार गर्ग (वाराणसी)
डॉ० रामविनय सिंह (देहरादून)
डॉ० रामरतन खण्डेलवाल (हरिद्वार)

**

प्रूफ संशोधक

मनमुदित नारायण शुक्ल

**

प्रकाशक :

श्री जयराम आश्रम

भीमगोड़ा, हरिद्वार – 249401 (उत्तराखण्ड)

मोबाइल नं. 01334-260251
ई-मेल : jairamsandesh@gmail.com

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी द्वारा भार्गव प्रिंटर्स, निकट ललतारौ पुल, जनपद-हरिद्वार, उत्तराखण्ड से मुद्रित एवं श्रीजयराम आश्रम भीमगोड़ा, जनपद हरिद्वार से प्रकाशित
सम्पादक : डॉ. शिवशंकर मिश्र

अनुक्रम

आशीर्वचन
सम्पादकीय
रामादिवत्प्रवर्तितव्यम्............प्रो० शिवशंकर मिश्र............1
वर्तमान परिप्रेक्ष्य में श्रीरामचरितमानस............प्रो० संगीता मिश्रा............6
रामायन सत कोटि अपारा............डॉ० नीलम त्रिवेदी............9
राम ही धर्म के विग्रह हैं............राम कुमार/कंचन कुमारी............12
मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम............पं० तनसुखराम शर्मा............16
श्रीराम का जीवनदर्शन : वाल्मीकि............डॉ० लज्जा भट्ट............20
श्रीरामचरितमानस में जयन्त परीक्षा............प्रो० रामराज उपाध्याय............25
श्रीराम की दिनचर्या............डॉ० कीर्तिवल्लभ शक्टा............28
रामकथा शशि किरन समाना............डॉ० सुनीता कुमारी............31
रामराज्य की प्रासंगिकता एवं महत्त्व............डॉ० राहुल प्रसाद............35
पुराणों एवं उपनिषदों में वर्णित मर्यादा............डॉ० कमलेश शक्टा............38
मानस में मानवीय मूल्यों के साथ............डॉ० के०जी० दीक्षित............40
रामकथा के संकीर्तित ग्रन्थों का परिशीलन...प्रो० रामबहादुर शुक्ल............41
श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण श्रीरामचरित्र............आचार्या मिनति रथ............47
तुलसीदास के अनुसार प्रभु श्रीराम............अमन शर्मा............49
महाकवि योगीश्वर के राम............प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र............53
साहित्य तथा व्याकरण की दृष्टि............डॉ० द्वारिका प्रसाद नौटियाल............57
श्रीराम एक तत्त्वोपदेष्टा गुरु............डॉ० आशुतोष गुप्त/तीजराम वर्मा............60
मानव जीवन के आदर्श–श्रीराम............अंकित सिंह यादव............66
स्वामी करपात्रीजी द्वारा रचित............आशीष शर्मा............71
रामराज्य में संविधान की............डॉ० अनिलानन्द............75
राम की प्रतिज्ञा–रामायण के विशेष............शोभा आर्या............80
वाल्मीकि रामायण और उत्तरपुराण............कु० पुष्पा............83
सास्त्र सुचिंतित पुनि–पुनि देखिअ............प्रियांजुल ओझा............87
रामराज्य : गाँधी जी का दृष्टिकोण............डॉ० धनंजय शर्मा............92
भासकृत नाटकों के राम............प्रो० शालिमा तबस्सुम/सपना............96
श्रीराम की ब्रह्मरूपता............डॉ० गीता शुक्ला............100
भगवान् श्रीराम का सपरिकर............मुदित कुमार पाण्डेय 'मगन दास'............103
श्रीरामचरितमानस में तुलसी की विनम्रता.... डॉ० चन्द्रपाल शर्मा............105
रामचरितमानस : मानवता का महाकाव्य..... डॉ० रामनारायण शर्मा............108
अध्यात्म रामायण में अभिहित राम............कोमल देवी............114
श्रीरामचरितमानस में भगवद्गुणवैभव............अंकुर नागपाल............117
मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के व्यक्तित्व............डॉ० विजय गुप्ता............121
जयराम आश्रम द्वारा संचालित विविध सेवाप्रकल्प

पत्रिका ऑनलाईन उपलब्ध - jairamashram.org/publication   jairamsandeshpatrika

- पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त चिन्तन से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं।
- पत्रिका के सम्बन्ध में किसी भी विवाद के निस्तारण का न्याय क्षेत्र केवल हरिद्वार होगा।
- पत्रिका के सम्पादक एवं परामर्श-परीक्षक मण्डल के समस्त सदस्य पूर्णतया अवैतनिक हैं।
- पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता के सम्बन्ध में सम्पूर्ण उत्तरदायित्व लेखक का ही है, प्रकाशक और सम्पादक का नहीं।

रामादिवत्प्रवर्तितव्यम्

प्रो० शिवशंकर मिश्र
शोध एवं हिन्दू अध्ययन विभागाध्यक्ष
श्रीला.ब.शा.रा.सं.वि.वि, नई दिल्ली

मनुष्य प्रज्ञाप्रधान प्राणी है, उसे समाज में अपने व्यवहार एवं आचरण से यश एवं अपयश की प्राप्ति होती है। जो व्यक्ति सभी के लिए अनुकूल आचरण करता है वह सदाचारी कहलाता है, किन्तु जो दूसरों के प्रति प्रतिकूल एवं असद् आचरण करता है वह दुराचारी कहलाता है। अब प्रश्न यह उठता है कि हमारा आचरण कैसा होना चाहिए। कोई कहता है कि हमें परोपकारी होना चाहिए, सत्यवादी होना चाहिए, सहयोगी होना चाहिए, सहिष्णु होना चाहिए, दयालु होना चाहिए, सरल-सुशील-सज्जन होना चाहिए, दूसरों का सम्मान करना चाहिए, अकारण दूसरों को कष्ट नहीं देना चाहिए, माता-पिता, गुरुजनों की आज्ञा का पालन करना चाहिए, लोभी नहीं होना चाहिए, क्रोधी नहीं होना चाहिए, धर्मपारायण होना चाहिए, उदार होना चाहिए, दानशील होना चाहिए, विप्र-धेनु-सुर-सन्त की रक्षा करनी चाहिए, वचन का पालन करना चाहिए। प्राण जाई पर बचन न जाई। सर्वे भवन्तु सुखिनः की कामना होनी चाहिये, सह नाववतु सह नौ भुनक्तु की भावना होनी चाहिए, मा विद्विषावहै की धारणा होनी चाहिए, पराई स्त्री में मातृबुद्धि होनी चाहिए, अहिंसा-सत्य-अस्तेय-ब्रह्मचर्य-अपरिग्रह-शौच- सन्तोष-तप-स्वाध्याय-ईश्वरप्रणिधान पारायण होना चाहिए; मृदुभाषी, ऋतभाषी तथा हितभाषी होना चाहिए, न्यायनिष्ठ, कर्तव्यनिष्ठ, धर्मनिष्ठ, कर्मनिष्ठ, वैराग्यनिष्ठ तथा आचरणनिष्ठ होना चाहिए। यह एक अत्यन्त सुदीर्घ कर्तव्यावली है। हमारे शास्त्रों एवं धर्मग्रन्थों में सहस्रों सहस्र ऐसे सदाचरणमूलक सन्देश एवं उपदेश हैं जिन्हें करने का दृढ़ विधान है और इसी प्रकार हजारों-हजार दुर्गुण और दोष भी हैं जो सर्वथा त्याज्य एवं निषिद्ध हैं।

अब समस्या यह है कि किसी भी मनुष्य को महान् बनने के लिये या किसी भी पुरुष को महान् पुरुष बनने के लिये सहस्राधिक कर्तव्य कर्म हैं जिनका एकैकशः प्रतिपादन एवं अनुपालन अत्यन्त कठिन एवं दुरूह है, इसलिए संस्कृत के किसी महान् पण्डित ने बहुत विस्तार की अपेक्षा समास में, अल्पशब्दों में समस्त सद्गुण, समस्त सदाचरण, समस्त दिव्यताओं का बोध कराने के लिए तथा उसे आचरण में उतारने के लिए बहुत ही संक्षेप में सूत्रशैली में एक लघु वाक्य का निर्देश किया है-**"रामादिवत् प्रवर्तितव्यम्"** अर्थात् राम की तरह व्यवहार करना चाहिए।

विद्वान् एवं कवि विस्तृत भावों एवं विचारों को सरल एवं लघु शब्दों द्वारा कहने में सिद्धहस्त होते हैं इसीलिए कहा गया- 'मितञ्च सारञ्च वचो हि वाग्मिता'। इसी वाग्मिता को अपनाते हुए क्या-क्या करना चाहिये? क्या-क्या नहीं करना चाहिए? इसके लिए एक सुदीर्घ गुणावली एवं दोषावली की उलझन से बचाते हुए संक्षेप में कहते हैं कि- **राम की तरह हमारा व्यवहार एवं हमारा आचरण** होना चाहिए। राम शब्द कहते ही समस्त सद्गुणों का निर्वचन एवं समस्त दुर्गुणों का निषेध हो जाता है, अर्थात् राम प्रतीक हैं उच्चादर्श, मर्यादा एवं नैतिकता के तथा साथ ही दुर्गुणहीनता एवं दोषशून्यता के भी। राम का ऐसा चरित्र है कि इस नाम को सुनते ही मन पवित्र एवं सदाचरणशील हो जाता है। मर्यादा का जागरण हो जाता है तथा दोष नष्ट होने लगते हैं इसीलिए राम नाम की महती महिमा हमारे ग्रन्थों में आचार्यों कवियों तथा भक्तों ने वर्णित की है-

रामेत्यक्षरयुग्मं हि सर्वं मन्त्राधिकं द्विज।
यदुच्चारणमात्रेण पापी याति पराङ्गतिम्॥[1]

हे द्विज! रा-म यह दो अक्षर सभी मन्त्रों में श्रेष्ठ हैं, इनके उच्चारण मात्र से महापापी भी परम गति को प्राप्त हो जाता है।

जपतः सर्वमन्त्रांश्च सर्ववेदांश्व पार्वति।
तस्मात् कोटिगुणं पुण्यं रामनाम्नैव लभ्यते॥[2]

एक साथ सभी मन्त्रों का और सभी वेदों का जप करने से जो दिव्य फल प्राप्त होगा, उस फल का करोड़ गुना

UGC - CARE LISTED

ISSN: 0974-8946

अनुसन्धान-प्रकाशन-विभागीया त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

शोध-प्रभा

(A Refereed & Peer-Reviewed Quarterly Research Journal)

48 वर्षे चतुर्थोऽङ्कः (अक्टूबर-दिसम्बर) 2023 ई०

प्रधानसम्पादकः

प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः

कुलपतिः

सम्पादकः

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः

शोधविभागाध्यक्षः

सहसम्पादकः

डॉ. ज्ञानधरपाठकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्ववि

(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)

नवदेहली-16

UGC-CARE Listed ISSN : 0974-8946

अनुसन्धान-प्रकाशन-विभागीया त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

शोध-प्रभा

(A REFERRED & PEER-REVIEWED QUARTERLY RESEARCH JOURNAL)

48 वर्षे चतुर्थोऽङ्कः (अक्टूबर-दिसम्बर) 2023 ई.

प्रधानसम्पादकः

प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः

कुलपतिः

सम्पादकः

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः

शोधविभागाध्यक्षः

सहसम्पादकः

डॉ. ज्ञानधरपाठकः

शोधसहायकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)

नवदेहली-110016

विषयानुक्रमः

संस्कृतविभागः

1. प्रतिपदटीकासमग्रावबोधसम्प्रदायानामवेक्षणम् 1-8
- प्रो० रहसबिहारीद्विवेदी

2. वैदिकदृष्ट्या सृष्टेः समीक्षणम् 9-13
- प्रो. रामानुज उपाध्यायः

3. मीमांसायां नञर्थविचारः 14-22
- प्रो. सन्तोषकुमारशुक्लः
- एवं श्रीप्रवीणसेमवालः

4. सामान्यवादे नव्यनैयायिकमतम् 23-25
- डॉ. विष्णुप्रसाद टी. रावलः

5. गौतमीयन्यायदर्शने निर्विकल्पकस्य अवधारणा 26-29
- प्रो. शिवशङ्करमिश्रः

6. निरौपचारिकशिक्षायां प्रौद्योगिक्याः भूमिका 30-38
- डॉ. प्रतिष्ठा पुरोहित

हिन्दी विभाग

7. वातुल की ऐतिहासिक समीक्षा 39-45
- प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र

8. आयुर्वेदान्तर्गत शालाक्यतन्त्र में परिगणित रोगों का ज्योतिषशास्त्रीय अध्ययन 46-60
- डॉ. धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

गौतमीयन्यायदर्शने निर्विकल्पकस्यावधारणा

- प्रो. शिवशङ्करमिश्रः*

प्रसिद्धेषु भारतीयदर्शनेषु न्यायदर्शनमन्यतमं स्थानं लभते। तत्र प्राचीनन्यायस्य विकासः प्रमाणादिपदार्थमवलम्ब्य सूत्रभाष्यवार्तिकटीकापरिशुद्धिपर्यन्तम् अभवत्। इयं परम्परा प्रायशः प्रमेयमाधारिकृत्य विकासधारां प्रत्यून्मुखं जातम्। षोडशपदार्थमनवलम्ब्य चतुर्विधप्रत्यक्षादिप्रमाणञ्चाश्रित्य नव्यन्यायस्य धारा गङ्गेशोपाध्यायादजायत। न्यायमते शब्दप्रयोगात्मकव्यवहारं प्रति असाधारणकारणं बुद्धिः, तदेव ज्ञानम्।[1] सविकल्पक-निर्विकल्पकभेदेन ज्ञानस्याऽपि भेदद्वयमुररीक्रियते। प्रकारतादिवैशिष्ट्यावगाहिज्ञानं सविकल्पकं भवति, यथा "अयं घटः" इत्यत्र इदमा भिन्नतया घटत्वप्रकारकघटविशेष्यकं ज्ञानं भवति। एतज्ज्ञानं नामजात्यादियोजनासहितं भवति। विकल्पेन सहितं सविकल्पकम्, विकल्पो नाम अभिधानाऽकाराऽभिधेयाऽकारयोरेकत्र प्रतीतिरेव।

निर्विकल्पाख्यं ज्ञानम् इन्द्रियाण्यतिक्रम्य भवति येन एतज्ज्ञानमतीन्द्रियम्।[2] सेन्द्रियत्वात् सविकल्पकस्य प्रतीतिः आपामराणां पर्यन्तं जायते, किन्तु व्यवहारे प्रतीतौ वा निर्विकल्पकस्य भानं न दृश्यते अतीन्द्रियत्वात्, तदा किमर्थं निर्विकल्पात्मकं ज्ञानमभ्युपेयते। निर्विकल्पस्यैवाऽभावे तत्स्वरूपसंख्यादीनां विचारस्त्वपास्तमेव। तदोच्यते यत् निर्विकल्पकाऽनङ्गीकारे तु "दण्डी पुरूषः" इत्यादिविशिष्टबुद्धौ सर्वदैव अनवस्थाऽपत्तिः प्रसज्येत्। तथाहि विशिष्टबुद्धौ विशेषणज्ञानं कारणमिति नियमादत्र "दण्डी पुरूषः" इति विशिष्टबुद्धौ दण्डज्ञानं कारणमिति। यावत्पर्यन्तं दण्डज्ञानं न भवति तावत्पर्यन्तं दण्डी पदार्थस्यापि ज्ञानं न भवति। प्रथमं दण्डस्य, ततः दण्डविशिष्ट-पुरूषस्य च ज्ञानं भवति। एवं दण्डज्ञानमपि दण्डत्वविशिष्टदण्डस्योपस्थित्यैव भवति, यतोहि न्यायदर्शने एकः नियमः स्वीक्रियते यत् जात्यखण्डोपाध्यतिरिक्तपदार्थानां किञ्चिद्धर्मपुरस्सरेण भासमानत्वम्, दण्डस्तु जात्यखण्डोपाध्यतिरिक्तः पदार्थः, अतः दण्डस्य भाने तु दण्डत्वमपि भासते। दण्डे विशेषणभूतस्य दण्डत्वस्य भानमपि यदि सविकल्पकैव भवति, सर्वस्यापि ज्ञानस्य किञ्चिद्विशेष्यककिञ्चित्प्रकारकत्वनियमः, यतोहि निर्विकल्पात्मकं ज्ञानमेव नास्ति। दण्डे विशेषणभूतस्य दण्डत्वस्यापि भानं सविकल्पकतया भानात्तत्र कोऽपि धर्मः प्रकारतया भासते। तस्याऽपि ज्ञानतया अथ च

---

* आचार्यः, लालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली

1. "सर्वव्यवहारहेतुर्गुणोबुद्धिर्ज्ञानम्" तर्कसंग्रहः
2. "ज्ञानं यन्निर्विकल्पाख्यं तदतीन्द्रियमिष्यते" कारिकावली, कारिका सं. ५८